मेराजे रसूल (स॰)

डाक्टर सै0 कल्बे सादिक़ साहिब

''बहुत मुबारक है वह ज़ात कि जिसने अपनी बन्दे पर कुर्आन नाज़िल किया ताकि वह हमारे अज़ाब से डराने वाला बने, किसके लिए, आलमीन के लिए'' (सूरा फुरक़ान आयत–1)

मैं यह कहता हूँ कि किसी मुसलमान को इन आयतों में और आयतों के तर्जुमे में शक तो नहीं? और अगर शक नहीं तो फिर हर मुसलमान भाई के सामने एक सवाल रखता हूँ और वह सवाल यह है कि जब हुज़ूर आए हैं सारी दुनियाओं के लिए तो हुज़ूर की सारी ज़िन्दगी इस छोटी सी दुनिया में क्यों महदूद रह गई?

यह ज़मीन जिस पर आप बैठे हुए हैं इसको आप जितना बड़ा समझें, इसकी हैसियत ही क्या है? यह काएनात में एक ज़र्रे से ज़्यादा की हैसियत नहीं रखती। आप इसको जितना चाहें बड़ा समझें, आप Astronomy और Cosmology पढ़े तो आपको मालूम होगा कि यह सूरज ज़मीन से लाखों गुना बड़ा है और इसका निज़ामे शमसी अरबों मील में फैला हुआ है। मगर हमारे हिसाब से यह अरबों मील तक फैला हुआ निज़ाम भी काएनात के नक़शे में इतना बड़ा भी नहीं कि एक नुक़ता रख कर इसकी तरफ इशारा किया जा सके। तो जब पूरा निज़ामे शमसी Solar System इतना छोटा है तो इसमें इस नन्हीं मुन्नी ज़मीन की हैसियत ही क्या? मुरसले आज़म (स॰) आए तो थे सारे जहानों के लिए और रह गये एक छोटी सी ज़मीन के ऊपर। यह तो कोई उसूल की बात नहीं हुई।

आप इस मुल्क में तशरीफ फरमा हैं। यह लम्बा चौड़ा मुल्क कैलिफोरनिया से लेकर न्युयार्क तक फैला हुआ है। इसे पार करने में सीधी उड़ान से भी 6 घण्टे लगते हैं। यहाँ के राष्ट्रपति है मिस्टर रीगन। तो क्या मिस्टर रीगन राष्ट्रपति चुने जाने के बाद से व्हाइट हाउस के बाहर नहीं निकले हैं और क्या उनको ज़ेब देता है कि सारे मुल्क के राष्ट्रपति बनें और व्हाइट हाउस में घूम फिरकर रह जाएँ। यह ऐसा कभी हुआ है और न ऐसा कभी हो सकता है। हर सरबराह अपने मुल्क में घूमता रहता है। इसीलिए आप देख लें मिस्टर रीगन को, आज वह लास ऐंजिल्स में हैं कल फलाडलफिया में, दो दिन के बाद न्युयार्क में हैं फिर ह्युस्टन में।

अब मैं सारे मुसलमानों से पूछना चाहता हूँ कि हुज़ूर (स॰) आए तो थे सारे जहानों के लिए और रह गये इस दुनिया के अन्दर। यह बात कुछ समझ में आने वाली नहीं है। इस ज़मीन की तो कोई हैसियत ही नहीं, यह तो ज़ीरो है, सिफर है। बस याद रखिये कि अगर हम हुज़ूर के मेराजे जिस्मानी को नहीं मानेंगे तो इस सवाल का जवाब नहीं दे सकते। इसीलिए किसी नबी को मेराज नहीं मिली, किसी रसूल को मेराज नहीं मिली मगर हुज़ूर को मेराज मिली। काएनात की सैर कराई गई बल्कि मालूम काएनात के बहुत आगे तक हुज़ूर (स॰) को ले जाया गया और

इसका ज़िक्र कुर्आन में भी कर दिया गया कि यह हक़ीक़त शक व शुब्हे से बाला तर रहे। तारीख़ को मशकूक क़रार दिया जा सकता है, कुर्आन को नहीं। इसीलिए 15वें पारे में इरशाद कर दिया गया:

मुझे मालूम है कि यहाँ पर भी बहस पैदा कर दी गई है। कुछ भाई कहते हैं कि पैग़म्बर **(स॰)** को जिस्मानी मेराज नहीं हुई थी पैग़म्बर **(स॰)** का जिस्म नहीं गया था मेराज में, बल्कि पैग़म्बर **(स॰)** ने सिर्फ एक ख़्वाब देखा था। मैं किसी पर कोई तनक़ीद नहीं करता। लेकिन यह भी हक़ीक़त है कि जब कोई क़ौम या कोई फर्द एहसासे कमतरी का शिकार होती है तो उसको नीचे–नीचे देखने की आदत हो जाती है। इस एहसासे कमतरी की वजह से हमको इतना नीचे देखने की आदत है कि रसूल **(स॰)** अपने जिस्म को इतना ऊँचा उठा रहे हैं, हम नज़र नहीं उठा पा रहे हैं।

अब से कोई दस बारह साल पहले की बात है एक सच्चा वाक़ेआ सुना दूँ, उस वक़्त लखनऊ में टी0वी0 नहीं आया था। अब यह बीमारी वहाँ भी आ गई है। दिल्ली में टी0वी आ चुका था। लखनऊ के कुछ लोग यहाँ मौजूद हैं, उन्हें मालूम है कि लखनऊ में जो ज़ौक़ और शौक़ और ''बाज़ियाँ'' फैली हुई हैं, उनमें कबूतरबाज़ी भी है। ख़ास तौर पर पुराने लखनऊ में बहुत कबूतर उड़ते दिखाई देंगे और इसी तरह हर दो चार घरों के बाद छत पर बाँस की छतरी लगी हुई दिखाई देगी। ख़ुदा मालूम वह कबूतरों के बिठाने के लिए होती हैं या कबूतरों को पकड़ने के लिए? मुझे पता नहीं, लेकिन यह ज़रूर है कि दो चार घरों के बाद आपको वह छतरी दिखाई दे जाएगी। अब मैं इत्तेफ़ाक़ से गया देहली, लखनऊ के एक साहबज़ादे मेरे साथ देहली तशरीफ ले गये, उस वक़्त देहली में टेलीवीज़न आ चुका था। मैं एक होटल में ठहरा गर्मी का ज़माना था, मैं ऊपरी खुली छत पर सो रहा था, वह साहबज़ादे भी उसी छत पर सो रहे थे। सुबह जब आँख खुली तो उन्होंने खुली और बलन्द छत से चारों तरफ नज़र दौड़ाई और फिर मुसकुरा कर फरमाने लगे जनाब यहाँ तो माशा अल्लाह लखनऊ से भी ज़्यादा कबूतरबाज़ हैं। मैंने कहा आपको कैसे पता चला? कहने लगे देखिये कितनी छतरियाँ यहाँ दिखाई दे रही हैं। मैंने कहा, भैय्या यह छतरियाँ नहीं, यह टेलीवीज़न के ऐण्टीना हैं।

देखा आपने! इनको कबूतर की छतरियाँ ही देखने की आदत थी इस लिए टेलीवीज़न का एण्टीना भी उन्हें कबूतर की छतरी ही दिखाई दिया। तो मुसलमानों को ख़्वाब देखने की ऐसी आदत हो गई है कि रसूल **(स॰)** की मेराज भी ख़्वाब ही दिखाइ दे रही है। आप देखिये, ख़ुद अल्लाह फरमा रहा है कि ''सुब्हानल्लज़ी'' आप सुब्हानल्लाह कब कहते हैं? अलहम्दुलिल्लाह! आपके सुब्हानल्लाह का मेयार बहुत बलन्द है। जब ऐसी ही कोई बात आपको पसन्द आती है तो आप सुब्हानल्लाह कहते हैं। लेकिन मैंने ख़ुद कभी अपने किसी नुक्ते पर सुब्हानल्लाह कहा? नहीं क्योंकि नुक्ता है ही नहीं इस लायक़ कि मैं सुब्हानल्लाह कहकर जैसे अपनी तारीफ ख़ुद करूँ। अब ज़रा ग़ौर कीजिये कि काएनात का पैदा करने वाला, उस के नज़दीक नबी **(स॰)** की मेराज कितना ज़बरदस्त कारनामा है कि जब मेराज का ज़िक्र आता है तो ख़ुद अपनी तारीफ करता है ''सुब्हानल्लज़ी'' सुब्हानल्लाह हमारी क्या क़ुदरत है कि हम नबी **(स॰)** को फर्श से अर्श

पर ले गये।

मगर कुछ मुसलमान ऐसे भी हैं जो इसके बाद भी कहते हैं कि हुज़ूर ने ख़्वाब देखा था। तो क्या पैग़म्बर ने कहा था कि मैंने ख़्वाब देखा था? हरगिज़ नहीं। मैं पूरी ज़िम्मेदारी के साथ आपके सामने यह कह रहा हूँ कि शीआ, सुन्नी, जितनी रिवायतें हैं सब को खंगाल मारिये, एक मन्ज़िल पर भी रसूल (स.) यह कहते हुए नहीं दिखाई देंगे, ''मैंने ख़्वाब देखा था''। रसूल (स.) मेराज की तफसील बयान करते हुए दिखाई देंगे कि यह हुआ, यह हुआ, यह हुआ। कभी न कहा कि मैंने ख़्वाब देखा था। यहाँ तक कि दुनिया से रुख़सत होते हुए भी हुज़ूर (स.) ने यह नहीं कहा कि मैंने ख़्वाब देखा था।

अब एक क़िस्सा मैं अपना सुना दूँ। जब तक तक क़िस्सा पूरा न हो जाए आप मेरे बारे में कोई राय न क़ायम कीजियेगा। अमरीका तो मैं हर साल जाता रहता हूँ मगर पिछले साल मेरे साथ यह वाक़ेआ हुआ कि रूस के राष्ट्रपति का मेरे पास पैग़ाम आया कि तुम हर साल अमरीका का दौरा करते रहते हो, एक बार रूस का भी दौरा कर लो। मैंने कहा, मेरे पास तो टिकट–विकट है नहीं न इतने पैसे हैं तो जनाब उन्होंने वहाँ से एक चार्टरड प्लेन मेरे लिये भेज दिया। बहुत इज़्ज़त व एहतेराम से बुलाया गया। मैंने रूस के मशहूर मक़ामात का दौरा किया, रूसी राष्ट्रपति से भी मेरी बा क़ायदा आमने–सामने बैठ कर बात हुई। देखा आप ने, मैं आपको सुना रहा हूँ सफर की दास्तान और आपको यह ख़याल कि रूस कम्युनिस्ट मुल्क, हुकूमत, मज़हब–दुश्मन, यह कैसे वहाँ बुलाए गए, बहर हाल आपने यहाँ के अख़बारों में छपवा दिया, हमारे मोलवी साहब रूस के राष्ट्रपति की दावत पर वहाँ गये थे और उन्होंने उनके आमने–सामने बैठ कर बातचीत की। और अगले साल मैं फिर यहाँ आया तो जनाब इण्टरव्यु लेने के लिए मुख़्तलिफ अख़बारों के नुमाइन्दे मेरे सामने खड़े थे कि साहब वहाँ आप कैसे चले गये थे? बताइये आपसे क्या बात हुई, कैसे बातचीत हुई? किन मसाएल पर बहस हुई? जब उन्होंने मुझ से सवाल करना शुरु किये तो मैं ने मुसकुरा कर कहा कि जनाब मैंने सारा वाक़ेआ यहाँ बयान किया था सिर्फ एक जुमला कहना भूल गया था कि मैंने ख़्वाब देखा था। बताइये आपकी क्या राय होगी मेरे बारे में। आप कहेंगे कि अजीब नामाकूल आदमी हैं यहाँ हमने इतना मश्हूर कर दिया, अख़बारों में दे दिया, इण्टरव्यु होने के सामान तैयार हो गये, टी0वी0 कैमरे सामने लगे हुए हैं। अब साल भर के बाद इनको याद आ रहा है तो कह रहे हैं मैंने ख़्वाब देखा था तो शायद लास एंजिल्स में मुझे फिर आना नसीब न हो। तो मैं बदनसीब आपके सामने साल भर के बाद कह भी रहा हूँ कि मैंने ख़्वाब देखा था और हुज़ूर (स.) दुनिया से रुख़सत हो गये और यह नहीं कहा कि मैंने ख़्वाब देखा था तो अब बताइये, हुज़ूर (स.) की कौन सी बताई हुई बात एतेबार के क़ाबिल रह गई।

अब हुज़ूर (स.) जन्नत की तारीफ करेंगे मैं कहूँगा हुज़ूरयह भी ख़्वाब देखा होगा, जहन्नम की दास्तान बयान करेंगे मैं कहूँगा मुमकिन है हुज़ूर ने यह भी ख़्वाब देखा होगा तो इसका मतलब यह कि हुज़ूर ख़्वाब नहीं देख रहे, असल में हम ख़ुद ख़्वाब देख रहे हैं।

बस अज़ीज़ भाईयों! याद रखें मेरे अज़ीज़ मुसलमान भाई। हर नबी को उस ज़माने के

मुताबिक़ मोअजिज़ा दिया गया। हज़रत मूसा (अ.) के ज़माने में जादू का ज़ोर था वैसा ही मोअजिज़ा दे दिया गया। हज़रत ईसा (अ.) के ज़माने में मेडिकल साइंस का, डाक्टरी का ज़ोर था, वैसा मोअजिज़ा दिया गया। तो मुसलमानों से मैं पूछना चाहता हूँ कि हुज़ूर (स.) का ज़माना क्या है। अगर हुज़ूर (स.) का ज़माना वही था जो चौदह सौ बरस पहले था तो मुझे कुछ नहीं कहना है। अगर मुसलमान कहते हैं कि हुज़ूर का ज़माना क़यामत तक है तो फिर हुज़ूर को ऐसा मोअजिज़ा मिलना चाहिए था जो हज़ारों बरस बाद आने वाले ज़माने के मुताबिक़ हो। आज के ज़माने की ख़ुसूसियत क्या है। इस ज़माने की ख़ुसूसियत है तेज़ रफ्तारी और ख़लाओं में तैरना और दूसरे Planets सैय्यारों पर। तो फिर याद रखिये हुज़ूर (स.) भी क़यामत तक के लिए रसूल बनाकर भेजे गये थे इसलिए क़यामत तक के ज़माने को नज़र में रखने के बाद एक मोअजिज़ा ऐसा दे दिया गया कि तुम्हारे ख़लाई जहाज़ चाहे जितनी ही तेज़ रफ्तारी इख़्तियार कर लें मगर हमारे नबी (स.) के पैरों की गर्द तक भी न पहुँच सकोगे।

लोग कहते हैं कि इतनी जल्दी कैसे चले गये, सिरे पर निकल गये काएनात के, ऊपर निकल गये। यह कैसे हो सकता है कि काएनात को पार कर लिया और बिस्तर गर्म रहा, दरवाज़े की ज़न्जीर भी हिलती रही और वापस भी आ गये। यह इमकान में नहीं है। सब कुछ फिक्शन है, कहानी है, ड्रामा है। सब अफसाना इसलिए आपकी समझ में आ रहा है कि आप यह समझते हैं कि हम यह कहते हैं कि पैग़म्बर गये। हालांकि न मैंने कभी कहा कि पैग़म्बर गये और न कभी कुर्आन ने कहा कि पैग़म्बर गये। कुर्आन ने भी कहा और मैं भी कह रहा हूँ, ख़ुदा ले गया। तो अब अगर ख़ुदा की कोई बात आपकी समझ में आ गई हो तो यह बात भी मैं आपको समझा दूँ। जहाँ तक मेरा इमकान है, मैं चाहता हूँ कि बात Clear हो जाए, साफ हो जाए।

अज़ीज़ भाईयों! आवाज़ की एक रफ्तार है। आप एक सौ गज़ के फासले पर खड़े हो जाएँ। मैं यहाँ खट से करूँगा तो एक सेकेण्ड के बाद वहाँ आपको आवाज़ सुनाई देगी। यह है आवाज़ की रफ्तार। क्या वह बारह सौ मील तक़रीबन एक घण्टो में सफर करती है? और मैं यहाँ रेडियो पर तक़रीर कर रहा हूँ और यहाँ से दस ग्यारह हज़ार मील के फासले पर हैं लखनऊ तो ठीक उसी लम्हे यह आवाज़ सुनाई दे रही है, तो यह कैसे सुनाई दे रही है? इसको तो कई घण्टे में वहाँ पहुँचना चाहिए था। तो आप कहेंगे कि आवाज़ की रफ्तार तो कम है मगर हमने तुम्हारी ज़बान से निकले हुए अलफाज़ को एक तेज़ रफ्तार सवारी पर सवार कर दिया और इस तेज़ रफतार सवारी का नाम है रेडियाई लहर। तो अब ये तुम्हारी आवाज़ नहीं जा रही है बल्कि यह तेज़ रफ्तार रेडियाई लहर तुम्हारी आवाज़ को ले जा रही है। तुम्हारी आवाज़ वहाँ तक नहीं जा सकती थी, अगर पहुँच भी जाती तो 12–14 घण्टे में पहुँचती मगर हमने तुम्हारी ज़बान से निकले हुए जुमलों को रेडियाई लहर की तेज़ रफ्तार सवारी पर सवार कर दिया तो वही फासला एक सेकण्ड के भी सोलहवें हिस्से में तै हो गया।

देखा आपने, इसका मतलब यह कि आप पैग़म्बर की यह हैसियत इन्सान की सुस्त रफ्तारी को देख रहे हैं और वहाँ अल्लाह यह फरमा रहा है यह गए नहीं बल्कि हमारी ताक़त थी कि हम

इनको ले गए। अब अल्लाह की ताक़त क्या है वह भी आपके सामने मैं अर्ज़ कर दूँ। आपके सामने न कहूँ तो किसके सामने कहूँ। जनाब आज की दुनिया में जो सबसे ज़्यादा तेज़ रफ्तार चीज़ मानी जाती वह है रौशनी की रफ्तार। मगर इस काएनात में आप अपनी मालूमात के एतेबार से रौशनी की रफ्तार को चाहे जितना तेज़ समझें जो तक़रीबन दो लाख मील कम से कम एक सकेण्ड में तय कर लेती है। अल्लाहु अक्बर! कितनी तेज़ रफ्तार रौशनी की रफ्तार कि एक सेकण्ड में दो लाख मील कम से कम। लेकिन काएनात इतनी बड़ी है भाई साहब कि यह रफ्तार भी चींटी की रफ्तार है। काएनात को तय करने के लिए काएनात में सबसे ज़्यादा अगर कोई तेज़ रफ्तार है तो वह कशिशे सक़्ल (गुरुत्वाकर्षण बल) की लहरें हैं, जो काएनात की दूरी, रौशनी दो लाख मील फी सेकण्ड की रफ्तार से करोड़ों साल में भी तय नहीं कर सकती मगर जो कशिशे सक़्ल (गुरुत्वाकर्षण बल) की लहरें है उनकी रफ्तार इतनी तेज़ है कि एक सेकण्ड के दसवें हिस्से में काएनात के एक हिस्से से दूसरे हिस्से में यह लहरें पहुँच जाती हैं। जब अल्लाह कशिशे सक़्ल (गुरुत्वाकर्षण बल) की लहरों को रफ्तार दे सकता है तो अल्लाह की मर्ज़ी काएनात के मरकज़े सक़्ल हुज़ूर करीम (स॰) को यह रफ्तार दे दे तो हैरत की क्या बात है?

हैरत की बात तो यह है कि हुज़ूर मेराज की मन्ज़िल में तशरीफ ले गये और जब पलट कर आए तो अली बिन अबी तालिब ने फरमाया कि हुज़ूर (स॰) मेराज का हाल आप बयान करेंगे या मैं बयान करूँ। और फिर वाक़ई पूरी तफसील बयान भी कर दी। इस मन्ज़िल पर कुछ लोगों को ग़लतफहमी हो जाती है और होना भी चाहिए कि वह यह समझते हैं कि चूँकि हम अली (अ॰) से मुहब्बत करते हैं इसलिए जहाँ कोई मन्ज़िल आई हम हमेशा अली (अ॰) को आगे बढ़ा देते हैं।

मैं अर्ज़ करता हूँ कि हम कभी अली (अ॰) को रसूल (स॰) से आगे नहीं बढ़ाते हाँ सिर्फ एक जगह बढ़ा देते हैं, बाक़ी हर जगह रसूल (स॰) को आगे रखेंगे। वह एक जगह कि जहाँ अली (अ॰) को आगे बढ़ाएंगे वह है मैदाने जंग। मैंदाने जंग में रसूल (स॰) को पीछे रखेंगे अली (अ॰) को आगे बढ़ा देंगे। तो यह अली (अ॰) को बढ़ाना नहीं तो और क्या है कि जो कुछ रसूल (स॰) ने वहाँ जाकर देखा वही अली (अ॰) ने बैठे–बैठ यहाँ देख लिया। अजी यहाँ तो समझाना दो मिनट की बात है, यहाँ कौन सी मुश्किल बात है। मैं यहाँ बैठता हूँ लास एंजिल्स में। थोड़े फासले पर यहाँ से केपकनावरल है जहाँ से ख़लाई जहाज़ चाँद पर जाते रहते हैं। वहाँ से कुछ ख़लाबाज़ चले चाँद का सफर करने के लिये। मैं यहाँ पर बैठा हुआ उनकी फिल्म देख रहा हूँ। कैसे गए, कैसे ख़ला में पहुँचे, कैसे ज़मीन का तवाफ किया, कैसे चाँद की तरफ रवाना हुए, कैसे चाँद पर उतरे, कैसे चाँद से फिर रवाना हुए। यह सब मन्ज़र मैं टी0वी0 पर देख रहा हूँ। इसके बाद मैंने देखा वह आकर फिर समुन्द्र में उतरे फिर जनाब उनको उठाया गया और जहाज़ में रखा गया। अब वह जहाज़ उनको लेके चला। अब जहाँ वह जहाज़ से आने वाले थे वहीं का टिकट मैंने भी लिया प्लेन का। जब वह वहाँ उतरे जहाज़ से तो मैंने उनसे हाथ मिलाया और कहा, हुज़ूर! चाँद पर जाने का वाक़ेआ आप बयान करेंगे या मैं बयान कर दूँ? क्या मैं उनसे आगे बढ़ गया! अरे वह,

वह हैं और मैं, मैं हूँ। मगर जो उन पर गुज़र रही थी वह सब मैं देख रहा था। तो मैं उनसे आगे नहीं बढ़ा वह मुझसे आगे हैं। तो अज़ीज़ भाइयों! अगर बरक़ी लहरों के वसीलों से मुझे चाँद पर जाने वालों की मेराज का मन्ज़र दिखाया जा सकता है ज़मीन पर बैठे–बैठे तो अगर रूहानी लहरों से अली बिन अबी तालिब (अ॰) पैग़म्बर (स॰) की मेराज का हाल देख रहे हैं तो इसमें कौन सी बड़ी बात है।

दास्तान तो बहुत लम्बी है लेकिन बस इतना और सुन लीजिये। तशरीह कर दूँ मेरे अहलेसुन्नत भाई जो यहाँ तशरीफ रखते हैं, ज़रा ग़ौर से सुनें मैं कभी किसी के दिल को तोड़ा नहीं करता, न कभी ख़िलाफे तहज़ीब कोई बात किया करता हूँ। लेकिन यह और तरह की बात है। अगर उनको मुझ पर भरोसा है तो भरोसा फरमा लें, अगर मुझ पर भरोसा नहीं है तो अपने किसी आलिम से पूछ लें। मैं ज़ाती ज़िम्मेदारी पर आप से कह रहा हूँ कि जब आप तजज़िया करेंगे कि कुछ मुसलमानों को यह ग़लतफहमी क्यों हो गई कि हुज़ूर (स॰) की मेराज जिस्मानी नहीं हुई बल्कि ख़्वाब देखा था तो इसकी जड़ में क़ाबिले ज़िक्र बस एक रिवायत है उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा की। वह मुअज़्ज़मा यह फरमाती नज़र आती हैं कि शबे मेराज पैग़म्बर का जिस्म मेरे जिस्म से जुदा नहीं हुआ। अब ज़ाहिर है कि मुसलमान इस बीबी की बात को कैसे झुठला सकते हैं जो उनकी नज़र में सिद्दीक़ा हों। इस बुनियाद पर कुछ मुसलमान यह कहने लगे कि पैग़म्बर (स॰) को मेराज हुई थी मगर रूहानी, यानी पैग़म्बर (स॰) ने ख़्वाब देखा था। उनका जिस्म बीबी के पहलू ही में रहा था।

मैं अपने मुसलमान भाईयों से पूरे अदब के साथ यह अर्ज़ करता हूँ कि इस रिवायत को अपने यहाँ से खुरच कर फेंक दें, अगर अपने पैग़म्बर (स॰) की इज़्ज़त चाहते हैं वरना अगर यह रिवायत यूरोपियन स्कालरों तक पहुँच गई तो और मुसीबत खड़ी हो जाएगी। अफसोस सद अफसोस कि मुसलमान ज़रा भी ग़ौर नहीं करते। अरे पैग़म्बर (स॰) को मेराज कहाँ से हुई? कुर्आन पढ़िये कुर्आन की लफ्ज़े हैं कि मक्का से मेराज हुई है हिजरत से पहले, हिजरत से पहले मक्का की ज़मीन से पैग़म्बर (स॰) को मेराज हुई, यह कुर्आन कह रहा है। और जिस बीबी की तरफ आप इस रिवायत को मन्सूब कर रहे हैं वह पैग़म्बर के पहलू में हिजरत के बाद मदीने में तशरीफ लाईं, वह उस साल रसूल (स॰) के पहलू में थीं ही कहाँ जो यह फरमतीं कि पैग़म्बर मेरे पहलू से जुदा नहीं हुए।

तो एक रिवायत मिलती है और इसका हासिल यह है कि पैग़म्बर को मेराज हुई मक्का से हिजरत से पहले, और हिजरत के बाद पैग़म्बर के घर में यह बीबी तशरीफ लाईं। मगर ऐसा मालूम होता है कुछ लोगों को इतनी जल्दी है पहुँचा देने की कि वह मक्का में ही पहुँचाए दे रहे हैं। लेकिन भाईयो! ज़रा सोचिये ज़रा ग़ौर कीजिये, कितनी बुरी बात है। कहीं यूरोपियन स्कालरों को ख़बर हो गई तो एक और मुसीबत खड़ी हो जाएगी, लेने के देने पड़ जाएँगे। मुसलमानों की रिवायतों का यह आलम कि रिवायत गढ़ने पर आते हैं तो कुछ भी याद नहीं रहता......झूठे का हाफिज़ा कमज़ोर होता है। इनको यह भी याद नहीं रह गया कि यह बीबी मक्का में थीं भी या नहीं।

बस अज़ीज़ भाईयों! मैं कहता हूँ कि

पैग़म्बर के लिए शायान शान था कि इनको इस मन्ज़िल पर बुला लिया जाए कि जहाँ या पैदा करने वाला हो या पैदा होने वाला हो, बन्दा हो या ख़ुदा हो, या ख़ालिक़ हो या मख़लूक़ हो। बात की वज़ाहत के लिए एक मिसाल दे दूँ। इस हाल में आप पूरा अन्धेरा कर दीजिये बस दो एक बल्ब रौशन रहने दीजिये। फिर एक प्लेट फर्श पर रख दीजिये छोटी प्लेट एक डेढ़ बालिश्त की। मैं आपसे पूछूँगा कि इस प्लेट का साया कितनी दूर तक पड़ रहा है? आप कहेंगे कि जितनी बड़ी प्लेट है उतना ही साया है। मैं कहूँगा एक फिट आप इसे ऊँचा कीजिये तो प्लेट उतनी ही बड़ी रही मगर उसका साया थोड़ा फैल गया, मैंने कहा ज़रा और उठाइये, आपने और उठाया, प्लेट तो उतनी ही बड़ी रही, प्लेट को बल्ब से मिला दिया तब जहाँ–जहाँ तक पहले उस बल्ब की रौशनी फैल रही थी वहाँ–वहाँ तक उस प्लेट का साया फैल जाएगा। अज़ीज़ भाईयों! याद रखिये कि अल्लाह ने अपने लिये कहा रब्बुलआलमीन और उनके लिये कहा रहमतुल लिलआलमीन। यानी जहाँ तक उसकी ख़ुदाई का दायरा है वहाँ उनकी रहमत का साया है। इसलिए ज़रूरी था कि उनको इस बुलन्द मन्ज़िल तक ले आया जाए कि जहाँ बन्दे और ख़ुदा के बीच से सारे फासले ख़त्म हो जाएँ कि जहाँ–जहाँ तक उसकी ख़ुदाई का दायरा था वहाँ–वहाँ तक उसकी रहमत का साया फैल जाए।

बस अज़ीज़ भाईयों! यह है पैग़म्बर (स॰) की मेराज का मुख़्तसर सा बयान। मगर याद रखिये कि पैग़म्बर (स॰) के जिस्म की मेराज अर्श पर चन्द लम्हों के लिए थी मगर किरदार की मेराज ज़मीन पर ज़िन्दगी भर रही। एक नफ्सियाती बात अर्ज़ कर दँ जो कमो बेश तमाम इन्सानों में पाई जाती है कि अगर वह मेहमान हो जाए किसी ऐसी ज़ात का जो बहुत अज़ीम हो, तो उसके मिज़ाज में एक तरह की बड़ाई का एहसास पैदा हो जाता है। सलाम के जवाब तक में दुश्वारी होती है। यह होता है कि नहीं? अब आप ज़रा इन्साफ से बताईये कि पैग़म्बर (स॰) तशरीफ ले गए उस मन्ज़िले अक़दस पर, अल्लाह के मेहमान हुए जहाँ सिवाए नूर के और कुछ नहीं, जहाँ मुहब्बतों भरी बातें हुईं, जहाँ आवाज़ें आ रही हैं कि क़रीब आओ और क़रीब आओ। कौन बुला रहा है, ख़ालिके़ काएनात, मालिके काएनात, अब ग़ौर कीजिये, काएनात के ख़ालिक़ का मेहमान बन कर ज़मीन पर आया तो उसको कौन सा मक़ाम मिला? यहाँ इसको ढेले मारे जा रहे हैं, यहाँ इसको पत्थर मारे जा रहे हैं, यहाँ इसकी राह में काँटे बिछाये जा रहे हैं। ख़ुदा की क़सम! अगर मामूली इन्सान होता तो उसको महोल में Adjust करना मुमकिन न होता मगर जब इसको पत्थर मारे गये तो पत्थर मारने वालों को सीने से लगा लिया। उसको ग़ालियाँ दी गईं तो गालियाँ देने वालों को दुआएँ दीं। जब उसकी राह में काँटे बिछाये गए तो राह में काँटे बिछाने वालों की मुश्किलों को हल कर दिया।

याद रखिये, वह जिस्म की मेराज है और यह रूह की मेराज है। मैं भी पैग़म्बर (स॰) की मेराजे रूहानी का क़ायल हूँ मगर वह ख़्वाब नहीं मेराजे किरदार है। पैग़म्बर के जिस्म की मेराज को देखना हो तो वहाँ देखो, किरदार की मेराज में देखना है तो यहाँ देखो।

(कुर्आन और साइंसः मजमूअए तक़ारीर)

